श्री अमर भारती

वीरायतन की मासिक पत्रिका नवम्बर-दिसम्बर-2022 वर्ष-65 अंक-11-12 मूल्य: रू० 10/-

नये वर्ष के लिए मंगलमय शुभकामनाएं।
इस मंगलमय वेला में आप सभी के लिए
बहुत-बहुत आशीर्वाद हैं।
नये वर्ष का केवल समय नया नहीं है,
हमें भी नया बनना है। हमारे विचारों को
नया रूप देना है। सभी कुछ पुराना
छोड़ने जैसा नहीं होता।
जो हमारी प्राचीन, सनातन संपदा है,
जो हमारे जीवन को, विचारों को
समृद्ध बनाता है उस सब को सुरक्षित
रखते हुए, जो भी अच्छा है उसे
हर नई सांस की तरह, हर क्षण लेते रहेंगे।
इन दोनों के समन्वय के साथ
हमें मंगलमय भविष्य की यात्रा करनी है।
वर्ष नया, समय नया, संकल्प नया,
सांस नई, ऊर्जा नई, जीवन शक्ति नई, यात्रा नई।
यह नया वर्ष नये विचार के साथ में प्रारंभ करें।
मंगलमय आशीर्वाद।
आप सभी का कल्याण हो।

VEERAYATAN
compassion in action

श्री अमर प्रेरणा ट्रस्ट एवं भारतीय जैन संघटना के अप्रतिम सहयोग से, वीरायतन की पालीताणा एवं बिहार की विभिन्न शाखाओं में **"मूल्यवर्धन शिक्षण कैंप"** का आयोजन नवंबर 7 से 25 तक संपन्न हुआ।

बिहार

पालीताणा

श्री अमर भारती

वीरायतन की मासिक पत्रिका नवम्बर-दिसम्बर-2022 वर्ष: 65 अंक: 11-12

संस्थापक
उपाध्यायश्री अमरमुनि

दिशा-निर्देश
आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी

•

सम्पादक
साध्वीश्री साधनाजी

•

महामंत्री
तनसुखराज डागा

उद्बोधन

एक-एक दीपक जुड़ने से,
दीवाली हो जाती जगमग।
एक-एक सद्गुण से जीवन,
होता जग जन पूजित पग-पग।।

अंधकार में दीप शिखाएँ,
जले प्रकाशित जन-मन हो।
शुभ कर्मों के खिले सुमन नित,
सुरभित मानव जीवन हो।।

अभयमुखी दीपक की लौ है,
निज-पर को उद्योतित करती।
ज्योतिर्मय जीवन की लौ भी,
निज-पर का हित साधित करती।।

–उपाध्याय अमरमुनि

This issue of Shri Amar Bharti can be downloaded from our website- www.veerayatan.org

अनुक्रमणिका

उद्बोधन	उपाध्याय अमरमुनि	01
मार्ग अमरता का	उपाध्याय अमरमुनि	02
विजया दशमी	आचार्य चन्दना	08
दीप पर्व	आचार्य चन्दना	16
वीरायतन नी सेवा	साध्वीश्री श्रुतरत्नाश्रीजी	17
अनेकान्त है मार्ग		18
दीपोत्सव का महापर्व	उपाध्याय अमरमुनि	19
अपना किरदार	प्रतिभा बोथरा	24
नये संकल्पों के साथ नये वर्ष में प्रवेश	आचार्य चन्दना	25
सव्वे कम्मा खयं जंति		26
जिन्दगी शानदार है, जी भर जिएं	जयदीप ढढ्ढा	29
स्मृति पुष्प		32

नये संकल्पों के साथ नये वर्ष में प्रवेश

नया समय, नया जीवन, नयी सांस, नयी स्फूर्ति, नयी शक्ति एवं नयी ऊर्जा से भरपूर नये संकल्पों के साथ हमें नये वर्ष में प्रवेश करना है। हमारी संस्कृति, सभ्यता और जीवन के अध्यात्म को सुरक्षित रखते हुए, नये वर्ष की मंगलमय यात्रा के लिए मंगलमय आशीर्वाद है प्रभु के, प्रभु भूमि के एवं गुरुजनों को।

मार्ग अमरता का

-उपाध्याय अमरमुनि

संसार में जितने प्राणी हैं, उन सबकी जो अन्तर्ध्वनि है, वह है- सुख प्राप्त करने की इच्छा। परिस्थितिवश जीवन में जो कुछ दु:ख आता है, विपत्तियाँ आती है, उन्हें कोई मन से नहीं चाहता। सब उन दु:खों एवं विपत्तियों से छुटकारा पाना चाहते हैं।

दूसरी बात जो सब प्राणियों में देखी जाती है वह है कि कोई भी प्राणी मृत्यु नहीं चाहता। और मृत्यु के बाद जन्म होता है और फिर मृत्यु होती है अत: व्यक्ति जन्म और मृत्यु का यह चक्र नहीं चाहता। वह अजर-अमर रहना चाहता है। यह बात अलग है कि किसी विकट स्थिति में मनुष्य अपना धैर्य चुक जाता है और आत्महत्या कर लेता है लेकिन वह आत्महत्या भी दु:ख से छुटकारा पाने के लिए ही करता है। उसे आगे सुख मिलता है या नहीं, यह बात अलग है।

मनुष्य जो कि विकसित प्राणी है, वह शुद्ध एवं पवित्र रहना चाहता है। वह स्वयं को अशुद्ध या मलिन रखना नहीं चाहता। वह अपना शरीर, अपने वस्त्र, अपना मकान, अपने आस-पास का वातावरण सबकुछ स्वच्छ और निर्मल चाहता है। मतलब निरन्तर उसका अशुद्धि के खिलाफ संघर्ष चलता रहता है।

भावना एक स्वरूप एक

इस प्रकार विश्व की प्रत्येक आत्मा में ये तीन भावनाएँ होती हैं। प्राणीमात्र को हम इसी धारा में प्रवाहित देखते हैं। ऐसा क्यों है? इसका उत्तर है कि आत्मा, हर जीव एक समान है। भगवान महावीर ने कहा, "एगे आया" स्वरूप की दृष्टि से सबकी आत्मा समान है। सबकी मूलस्थिति समान है। स्वरूप की दृष्टि से आत्मा-आत्मा में कोई अन्तर नहीं है।

अग्नि जहाँ भी प्रकट होगी, वहाँ उष्णता होगी। चाहे अग्नि दिल्ली में प्रज्वलित हो या दूसरे किसी देश में, उसकी उष्णता में और ज्योति में कोई अन्तर नहीं होता। दिल्ली में तो वह गरम होगी और दूसरे देश में ठण्डी होगी ऐसा नहीं होता। दिल्ली में वह प्रकाश करेगी और दूसरे देश में वह अंधेरे का सृजन करेगी ऐसा नहीं होता। सर्वत्र उसका स्वरूप एक समान होता है।

इसी प्रकार प्रत्येक आत्मा जब समान है तो उसकी अन्दर की तीनों भावनाएँ भी समान है। हमारी सारी प्रवृत्तियों का एक ही

लक्ष्य होता है– दु:ख मुक्ति, मृत्यु से अमरता और अशुद्धि में से शुद्धि।

प्रश्न है कि दु:ख से छुटकारा कौन देगा? क्या कोई देवता दु:ख से छुटकारा देगा? कोई भगवान हमें मृत्यु से बचायेगा? संसार में अगर कहीं कोई शक्ति हो जो आकर हमें शुद्ध बना देगी, तो हम उनकी भक्ति, प्रार्थना और खुशामद करें।

भारतीय दर्शन जो एक अध्यात्म चेतना का दर्शन है, वह कहता है कि संसार में बाहर में कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो तुम्हे दु:ख से बचा सके, मृत्यु से तुम्हारी रक्षा कर सके, तुम्हारी अपवित्रता को धोकर पवित्र कर सके। तुम स्वयं हो तुम्हारे जीवन के निर्माता, तुम ही हो तुम्हारे भाग्य के निर्माता।

दु:ख किसने दिया?

तुम दु:ख से छुटकारा तो मांगते हो परन्तु वह दु:ख तुम्हें दिया किसने? भगवान महावीर पूछते हैं– **"दुक्खे केण कडे?"** और उन्होंने ही इसका उत्तर दिया– "जीवेण कडे पमाएण" दु:ख स्वयं जीव ने पैदा किया है। क्यों का भी उत्तर दे दिया है– पमाएण मतलब प्रमाद के वश होकर उसने स्वयं ही दु:ख को जन्म दिया है। स्वयं जीव ने ही स्वयं का दु:ख पैदा किया है किसी दूसरे ने नहीं। अपने प्रमाद के वश में होकर अपना दु:ख सृजित किया है। अशुद्धि भी किसी दूसरे ने तुममें नहीं डाली है। अपनी ही भूल के कारण आत्मा मलिन हो रहा

है। अपनी भूल को खुद को ही सुधारना होगा। कोई दूसरा आकर नहीं सुधारेगा हमारी भूलों को।

स्वयं कर्म करोत्यात्मा, स्वयं तत्फलमश्नुते।
स्वयं भ्रमति संसारे, स्वयं तस्माद् विमुच्यते॥

आत्मा स्वयं ही कर्म करता है और स्वयं ही उसको भोगता है। स्वयं संसार में भ्रमण करता है और स्वयं ही संसार से मुक्त होता है।

ईश्वर तुमसे असत्कर्म क्यों करायेगा?

हमारे कुछ बंधु इन विचारों को लेकर चल रहे हैं कि ईश्वर ही मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा देता है। वह चाहे तो किसी से सत्कर्म करा लेता है और चाहे तो किसी से असत्कर्म करा लेता है। बिना उसकी इच्छा के वृक्ष का एक पत्ता भी नहीं हिल सकता।

प्रश्न है कि अगर कर्म कराने का सारा अधिकार ईश्वर के पास ही है तो ईश्वर किसी से असत्कर्म क्यों कराता है? सबको सत्कर्म की प्रेरणा क्यों नहीं देता? कोई भी पिता अपने पुत्र को गलत काम करने की शिक्षा नहीं देता। उसे बुराई की ओर प्रेरित नहीं करता। जब ईश्वर संसार के परम पिता है तो वे ऐसा कैसे कर सकते हैं? कि वे पहले बुराई करने की प्रेरणा देते हैं और उसके बाद उसे दण्ड देते हैं।

जाको प्रभु दारूण दु:ख देहि।
ताकि मति पहले हर लेहि॥

मेरी समझ में आजतक यह बात नहीं आयी कि ईश्वर ऐसा क्यों करता है? जिसे दु:ख देना है उसकी बुद्धि को पहले ही नष्ट कर देता है। मैं पूछना चाहता हूँ कि अगर वे बुद्धि नष्ट कर सकते हैं तो निश्चित ही सद्बुद्धि भी दे सकते हैं। फिर क्यों नहीं सद्बुद्धि दे देते हैं कि वह व्यक्ति खराब कार्य में फंसे ही नहीं? और फिर दु:ख पाये ही नहीं?

कुछ बंधु इस विचार के है कि कर्म के कर्तृत्व में आत्मा को स्वतन्त्र मानते है किन्तु फल देने के लिए ईश्वर को ले आते हैं। वे कहते हैं कि प्राणी अपनी इच्छा से सत्कर्म तथा असत्कर्म करते हैं किन्तु ईश्वर न्यायाधीश की तरह प्राणी को कर्मफल भोगने में बाध्य करता है।

यह तो ऐसा ही है जैसे कोई पिता अपने पुत्र को बुराई करते तो नहीं रोकता लेकिन जब बुराई कर लेता है तब उस पर कोड़े बरसाता है। तो क्या वह योग्य पिता कहलाता है? पिता पहले बेटे को खुला छोड़ देते हैं कि

जो तेरे मन आये सो कर। और बाद में खुद उसे पुलीस के हवाले कर देते हैं। क्या यह योग्य पिता का काम है? गुरुदेव कहते हैं–

जो तू देखे अंध के, आगे है एक कूप,
तो तेरा चुप बैठना है निश्चय अघरूप।

अगर आप देख रहे हैं कि मार्ग में चलते एक अंधे के आगे गढ़ा है, पत्थर है या कांटे हैं और वह चलता रहेगा तो संकटग्रस्त हो जायेगा, गिर जायेगा, दु:खी होगा तो ऐसी स्थिति में तुम्हारा चुपचाप बैठे रहना गलत है। अगर तुम देखते हुए भी उसे बचाने की कोशिश नहीं करते हो तो आप उसे गर्त में गिराने के महापाप के भागी बनते हो। कोई संकट में पड़ रहा हो और आप उसे बचा सकते हो तब भी बचाने का प्रयत्न नहीं करते हो किन्तु संकट में पड़ने के बाद उसे बुरा-भला कहते हो, उसे दोषी ठहराते हो। यह कहां तक ठीक कहा जा सकता है?

ईश्वर जब सर्वशक्तिमान है तो प्राणियों को शुभाशुभ कर्मों के फल देने से पहले उन्हें अशुभ कर्मों से हटने की प्रेरणा देनी चाहिए और सत्कर्म में प्रवृत कराना चाहिए।

आत्मा ही कर्ता है

ईश्वर के सम्बन्ध में ऐसी उलझनें सुलझाने के लिए हमें भारतीय दर्शन के आत्मदर्शन को समझना होगा। आत्मा स्वयं-स्वयं की प्रेरणा से कार्य करता है और स्वयं ही उस कर्म के अनुसार उसका फल भोगता है। आत्मा का कल्याण आत्मा से ही किया जाता है और आत्मा से ही आत्मा का पतन होता है। इसलिए स्वयं ही स्वयं का अभ्युत्थान करो। पतन मत होने दो। यह आत्मा के स्वतन्त्रता की आवाज है। यह अखण्ड चेतना का प्रतीक है। कर्म कर्तृत्व और कर्मभोग दोनों आत्माधीन है। इसलिए आत्मस्वरूप को जानकर शुद्धता को प्राप्त करना ही अमरता का मार्ग है।

अपरिग्रह के सम्बन्ध में भी यही बात है। पूछा गया कि अपरिग्रह क्या है तो कहा, 'मूर्च्छा परिग्रह है' आसक्ति ही परिग्रह है। वस्तु का त्याग अपरिग्रह नहीं है, मोह का, आसक्ति का त्याग अपरिग्रह है। प्रश्न हो सकता है कि वस्तुओं का त्याग क्या है? आप कहे कि मैंने वस्त्रों का त्याग किया, धन का त्याग किया। तो मैं पूछता हूँ कि क्या वे कपड़े, वह धन आपका था? आप चैतन्य स्वरूप हो। वस्तु जड़ है। जड़ और चैतन्य का क्या सम्बन्ध? गधे और घोड़े का क्या सम्बन्ध? जड़ पर चैतन्य का कोई अधिकार नहीं और न चैतन्य का चैतन्य पर कोई अधिकार है तब वह त्याग किसका?

हमारा अपना क्या है? ज्ञानमय आत्मा अपना है। अखण्ड चैतन्य जो कि अपना है उसका त्याग नहीं हो सकता। वस्तु का त्याग वास्तव में त्याग नहीं है। फिर प्रश्न तो शेष रहता ही है कि अपरिग्रह का क्या अर्थ है? तो उत्तर है कि वस्तु के प्रति जो ममत्व है, राग है, मूर्च्छा है उसका त्याग अपरिग्रह है। ममता हटने से रागबुद्धि मिटती है। शरीर रहते हुए भी अपरिग्रह भाव है, देह होते हुए भी देहातीत अवस्था है। देह के प्रति निष्काम और निर्विकल्प अवस्था जब प्राप्त होती है तब सम्पूर्ण अपरिग्रह की साधना होती है। यही अमरता का मार्ग है।

■■■

वीरायतन-मेरठ में आयोजित
'नि:शुल्क मेगा नेत्र चिकित्सा शिविर'

मेरठ वीरायतन द्वारा आयोजित 'नि:शुल्क मेगा नेत्र चिकित्सा शिविर' पद्मश्री आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी श्रद्धेय ताई माँ, उपाध्याय डॉ. विशालमुनिजी, साध्वी श्री लोकेंशजी (दिव्य ज्योति जागृति संस्थान) व महासती विशुद्धिजी की कृपा से अत्यन्त सुन्दरता से सम्पन्न हुआ। कैम्प की एक विशेषता थी कि चेयरमैन से लेकर सदस्यों तक तथा समाज की अनेक संस्थाओं, कार्यकर्ताओं का सम्पूर्ण सहयोग रहा। बिना भेदभाव के हर मरीज की सम्मानपूर्वक सेवा की गई। इस कैम्प में प्राय: 350 मरीजों की जाँच तथा 180 मरीजों के ऑपरेशन चिह्नित किये गये। ये ऑपरेशन डॉ. श्रॉफ नेत्र हॉस्पिटल नई दिल्ली में होंगे। ऑपरेशन फेकोविधि से होंगे और उन्हें दवा, चश्मा तथा प्रसाद रुप में भोजन थाली के साथ दिया गया।

गुरुदेव उपाध्याय श्री अमरमुनिजी का युगपुरुष श्री रोशनलाल का आशीर्वाद सदैव हमारे साथ है। इस अवसर पर 40 लोगों ने अपनी आंखें डोनेट करने का संकल्प लिया।

–कीमतीलाल जैन, चेयरमैन- मेरठ

विजया दशमी

-आचार्य चन्दना

आज का दिन, आज का सूरज हमारे प्राचीन परम्परा के इतिहास की एक पावन स्मृति लेकर आया है। वह स्मृति हमारी अजर-अमर है। वह भूत को भी गौरवान्वित करती आयी है, वर्तमान को गौरवान्वित कर रही है और हमारे भविष्य को भी गौरवशाली बना सकती है। यह स्मृति है विजया दशमी की। दशमी तो बस एक तिथि है। यह तो काल के प्रवाह का बहता पानी है; किन्तु एक बात महत्त्वपूर्ण है कि हमारे महान् पूर्वजों ने इतिहास के कुछ क्षणों को ऐसे पकड़ा कि फिर उसे छोड़ा नहीं। भले ही कुछ विकृतियाँ आती गई किन्तु उसके मूलरूप को पकड़े रखा है। विजया दशमी यह विजय का पर्व है।

धैर्य धारण करो

जीवन में क्या हम पराजय के शिकार होते जाय, ठोकरें खाते जाय, लुढकते जाय, आँसू बहाते जाय, क्या यही जीवन है? ऐसे

जीवन से न तो कोई व्यक्ति जिन्दा रह सकता है और न कोई परिवार, समाज या राष्ट्र जिन्दा रह सकता है और न ही कोई धर्म-परम्पराएँ जिन्दा रह सकती हैं।

भारतवर्ष के महान् ऋषियों का उद्गार है- जब कोई निराश हताश जिसके पैरों के नीचे की धरती खिसक गई, लगा उसे कि अब कोई सहारा नहीं है, वह पहुँचा है सद्गुरू के पास और गुरू ने कहा "मा रोदि, धैर्यमावह।" मत रोओ, तू रोने के लिए नहीं है। तू रो-रोकर जिन्दगी गुजारने के लिए नहीं है। तू रोयेगा और आसपास के दूसरे लोगों को भी रूलायेगा और इस तरह सारा संसार रोता चला जाएगा। धैर्य धारण करो। वीर बनो। जीवन की समस्याओं के साथ संघर्ष करो और उन संघर्षों पर अपने आपको पूरी शक्ति के साथ लगा दो, जीवन की कोई भी शक्ति का अंश बाकी मत छोड़ो। सबकुछ अर्पित कर दो। कालक्षेप हो सकता है। देर हो सकती है। जरा काल लम्बा होता जाता है तो मनुष्य अधीर बन जाता है कि आज यह नहीं हुआ। दूसरे दिन भी नहीं हो पाया तो सोचता है, आज भी नहीं होगा और इस तरह से उसका धैर्य क्षीण हो जाता है। उत्साह क्षीण हो जाता है। वह नीचे गिरता चला जाता है। निराशा

के अन्धकार में ठोकरें खाता चला जाता है। इसलिए गुरू कहता है वत्स, मत रोओ, धैर्य धारण करो। बस अपनी भुजाएँ उठाओ और पूरी शक्ति से धैर्य को धारण करो और तब बह धैर्य तुम्हें धारण कर लेगा।

उद्यान ते नावयातं

यह एक दृष्टि है हमारी। इस दृष्टि को देने देते हैं हमारे पर्व। कोई पर्व किसी नाम से तो कोई किसी नाम से। यह विजय की संस्कृति का पर्व है। इस पर्व का सन्देश है पराजित मत रहो। संघर्ष करते ही रहो। चलते ही रहो। जब तक कि तुम अपने लक्ष्य पर न पहुँचो। बाहर में भी और अन्दर में भी। जीवन में विकास के पथ पर निरन्तर प्रयत्न करते रहो। "उद्यानं ते नावयानं।" उद् अर्थात् ऊपर, एक सीढ़ी से दूसरी, तीसरी सीढ़ी चढ़ते जाओ। एक शिखर से दूसरे शिखर पर चलते चलो। नावयानं। संभलकर रहना, अवयान न हो जाय तेरा। पैर नीचे न फिसले। अगर पैर नीचे फिसल गया तो बस कुछ नहीं रहेगा। तेरा अस्तित्व ही नहीं बचेगा। अस्तित्व को रखना है तो दृष्टि को ऊपर रखो, और जो दृष्टि को ऊपर रखेगा उसकी सृष्टि भी ऊँची ऊर्ध्वमुखी होती चली जायेगी। यह है हमारी संस्कृति। और यह है हमारे पर्व की दृष्टि।

कुछ विकृति आ गई है

नवरात्र में शक्ति पूजा होती है। आठ दिन तक बराबर शक्तिपूजा की परम्परा रही है। शक्तिपूजा ने कुछ विकृत रूप ले लिया है। विकृत हो जाती है परम्पराएँ। अज्ञान आ जाता है कभी। विचार शून्यता आ जाती है तब आत्मा छूट जाती है। केवल उस शरीर को उसके बाहर के रूप को लोग पकड़े रहते हैं। अगर प्राण निकल जाए तो शरीर, शरीर नहीं रहता वह मुर्दा हो जाता है जो घर में रखने के लिए नहीं होता। ऐसी ही स्थिति हमारे पर्वों की विकृतियों के कारण हुई है। शक्ति पूजा तो हुई है; लेकिन उस शक्ति पूजा में क्या हुआ है? हजारों हजार बिचारे बकरे कट जाते हैं। पशु कट जाते हैं और हम मानते हैं कि बहुत बड़ी शक्ति पायी है। बकरों को मार कर क्या शक्ति पायी? और उस देवी की भी क्या शक्ति हुयी। क्या दिव्यता है मारने में?

शक्ति का अर्थ तो यह है कि जो हमारे अन्दर दुर्बलताएँ हैं, हमारी मानसिक दुर्बलताएँ हैं हमारी परम्पराओं की दुर्बलताएँ हैं, उन्हें हम मिटायें। लेकिन हम लकीर के फकीर हो जाते हैं और मूल को खो बैठते हैं। अपनी शक्ति को खो बैठते हैं और फिर भिखारी बनकर हाथ फैलाते फिरते हैं। **'भिक्षां देही'** भीख दीजिए। माई-बाप भीख दीजिए। इस प्रकार देवी और देवता के आगे गिड़गिड़ाते हैं। उस भीख में बिचारे बकरों की बली चढ़ाते हैं।

दुर्बल होते हैं परंपरा के गुलाम

कितना गहन अन्धकार है! कैसी विचित्र विकृति है जीवन की! ये सब दुर्बलता

के क्षण हैं। जो दुर्बल है, उनमें कुछ शक्ति नहीं है। आमतौर पर दुर्बल व्यक्ति परम्परा के गुलाम होते हैं। जब कोई समाज दुर्बल होता है, जब कोई राष्ट्र दुर्बल हो जाता है, जब कोई धर्म दुर्बल हो जाता है, कायर हो जाता है तो नये सृजन की, नये निर्माण की, नये उत्थान की, नये विकास की बौद्धिक शक्ति उसमें नहीं रह पाती और कर्म शक्ति जिसमें नहीं रहती वह परम्परा का गुलाम हो जाता है। फिर वह भूतकाल की दुहाईयाँ देने लगता है। वह कहता है कि ऐसा था, ऐसा कहा था, ऐसा हुआ था। वह 'था' में घुस जाता है; लेकिन क्या है, उसमें नहीं रहता। और क्या होना है हमें, उसमें भी नहीं जाना चाहता। इस प्रकार से वह गड़बड़ा जाता है। अपने पूर्वजों का सम्मान करना एक श्रेष्ठ संस्कार है। उनका बहुमान करना एक अच्छी बात है; लेकिन उन्होंने अपने देश काल परिस्थिति के अन्दर जो किया वह अलग था और तुम्हारी देश, काल परिस्थिति अलग है। तुम्हें कुछ और करना है। उनके गौरव को बराबर ध्यान में रखो। उनकी धीरता थी, उस काल में भी कितने संकटों को पार करके उन्होंने निर्माण किया था। उस काल, उस देश, उन परिस्थितियों के अनुरूप। उनसे तुम साहस ले सकते हो, धैर्य ले सकते हो, प्रेरणा ले सकते हो; लेकिन तुम्हें तो जीना अपने वर्तमान में है। तुम्हारा देश बदल गया है, परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। इन परिस्थितियों में तुम्हें नये सिरे से निर्माण करना होगा। एक महत्त्वपूर्ण बात कही है आचार्य ने–

यस्यास्ति सर्वत्र गतिः स कस्मात्
स्वदेश रागेण न हि याति खेदम्।
तातस्य कुपोऽयमिति ब्रुवाणा
क्षारं जलं कापुरूषाः पिबन्ति॥

जिसमें स्वयं कुछ शक्ति है और जिसमें गति है, अर्थात् विकास करने के लिए कदम मजबूत है, दृढ़ है उसे सर्वत्र स्थान मिलता है। सभी जगह उसकी पहुँच है। वह अपने घरौंदे में पड़ा-पड़ा क्यों रोता रहेगा? कोई कहे कि भई छोड़ दे घरौंदा, बाहर निकल जरा, काम कर तो कहे कि कैसे छोडु? यह तो मेरे बाप दादों का है। उन बड़ों के नाम पर उस गिरते पड़ते घरौंदों में जिसकी एकेक ईंट खिसकती जा रही है, ऊपर से एकेक ईंट गिर रही है, सिर फोड़ रही है; लेकिन छोड़ता नहीं उसे। यह तो शक्ति हीनता है। जिसकी गति सर्वत्र है, वह एक जगह क्यूँ रहेगा?

किसी के पास में, नजदीक में कुँआ नहीं होगा, देखता है कि दूर जाना पड़ेगा पानी के लिए तो घर में ही कुँआ खोदता है, दुर्भाग्य से खारा जल निकलता है, अब आगे की सन्तान उस खारे कुँए का ही पानी पीती है। बीमार पड़ती है निरन्तर खारा पानी पीकर, दुर्बल होती जा रही है। किसी ने कहा कि गाँव के बाहर में मीठे पानी का कुँआ है। दूर तो है लेकिन मीठा पानी लाकर पीओ। तो कहता है

यह कुँआ हमारे बाप का है। खारा है तो क्या है। है तो हमारे बाप दादा का। हम तो अपने पूर्वजों के कुँए का ही पानी पीयेंगे। बड़ी जोरदार बात कहते हैं आचार्य कि जिनमें चिन्तन शक्ति नहीं है, कर्म शक्ति नहीं है और सीमाओं से आगे बढ़कर आगे जाने तथा मीठे जल तक पहुँचने का साहस खो बैठे हैं वे कायर नर अपने पूर्वजों के कुँए का खारा ही जल पीते रहते हैं।

विजय दशमी का यह पर्व खोये हुए साहस को पुनः प्राप्त करने का पर्व है, सीमातिक्रमण का पर्व है। जो सीमाएँ हमने बना ली है उनको लांघो ओर आगे बढ़ो। विस्तार पाओ। हर वर्ष सीमाओं का अतिक्रमण करो। जो रेखाएँ बना ली है उन रेखाओं से आगे बढ़ो और सीमा का आगे से आगे विस्तार करते चलो। जो हमारी सीमाएँ बनी थी अब उन सीमाओं में अवरूद्ध रहने का कोई मतलब नहीं है। जो सीमाएँ हैं हमारे विकास की, उनको आगे बढ़ाओ। आगे विकास की तरफ ले चलो।

माइल का पत्थर, विकास का कदम आगे रख दो। अगले वर्ष जरा और आगे बढ़ो। इस प्रकार से पुरानी पीढ़ी से नयी पीढ़ी को आगे बढ़ना है। विकास करना है और इसमें पूर्वजों की स्मृतियों को ध्यान में रखना है; लेकिन उसी पड़ाव पर पड़े नहीं रहना है। हर पड़ाव को आगे बढ़ाते जाना है।

शिवः शवत्या

नव दिनों तक शक्ति पूजा का अर्थ है शक्ति का संग्रह। संसार में वही जिन्दा रहेगा जो सशक्त होगा। जीवित रहने का अधिकार भी उसे है जो समर्थ है। असमर्थ, दुर्बल, हीन और दीन को जीने का कोई अधिकार नहीं है। वह तो **'पृथिव्यां भारः'** भूमि का भार है एक प्रकार से। बोझ है। मुर्दों का ढेर लग जाएं तो क्या होगा? जीवन चाहिए। प्राण शक्ति चाहिए। शक्ति ही जीवन है। आचार्य शंकर ने 'सौन्दर्य लहरी' जब लिखी, पहले ही लिखा– 'शिवः शक्त्यायुक्तः।' शिव कब तक शिव है? जब तक वह शक्ति से युक्त है तभी तब वह शिव है और शक्ति न रहे तब शिव 'शव' बन जाता है। नागर भाषा में जब शिव लिखते हैं शव लिखकर इकार लगाते हैं। वह मात्रा प्रतीक है शक्ति की। अगर वह इ की मात्रा लगी हुई है तब श और व शिव है और अगर वह इ की मात्रा हट जाय तो शव रह जाता है, मुर्दा। जीवनहीन और जो मुर्दों के पास रहेगा वह भी मुर्दा ही होता जायेगा। कब्र में सोनेवाले के पास जाकर कोई सोये तो वह भी कब्र में सोया रह जायेगा। इसलिए शक्ति चाहिए और शक्ति के साथ चाहिए विवेकज्ञान। महत्त्वपूर्ण सूत्र है

"ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः।" ज्ञान का प्रकाश चाहिए और ज्ञान के साथ क्रिया शक्ति चाहिए। लेकिन ज्ञान पहले है। विवेक विचार पहले है। चिन्तन के प्रकाश में जो कर्म होता है वही शक्ति है। दोनों जब मिलते हैं तब बन्धनों से मुक्ति प्राप्त होती है, विकास प्राप्त होता है। ज्ञान के प्रकाश में चलना है, प्रकाश ही मार्ग है, शक्ति ही मार्ग है। मार्ग को पूछने की क्या आवश्यकता है, क्यों पूछते फिरो कि कौन रास्ता है? अगर पूछ भी लो तो कोई बात नहीं; लेकिन पूछने पर मत रहो, चल पड़ो।

बलिया उज्जड बाट

केशराज कहता है जिधर तुम निकल जाओगे वही पथ बनता जायेगा। पगडण्डियाँ कैसे बनती है? पद्धत्ति अर्थात् पैर पड़ते जाय और मार्ग बनता जाय। पद से आहत भूमि एक रूप ले लेती है। वही पद्धत्ति और पगडण्डी कहलाती है। इस दृष्टि से जैन रामायण का राजस्थानी कवि कहता है- "कायर ने सब सोचनो रे बलिया उज्जड़ बाट।" कायर सोचता रहता है- किधर से जाना होगा, कौन रास्ता होगा, क्या होगा, कैसे होगा, जो बलवान है वह चल पड़ता है। जिधर चलता चला जाता है, रास्ता बनता चला जाता है। महावीर ऐसे ही चल पड़े हैं, बुद्ध ऐसे ही चल पड़े हैं, अनेक महापुरूष ऐसे ही चल पड़े हैं। श्रीकृष्ण बराबर कहते रहे- अर्जुन उठो, इस असत्य से, अन्याय और अत्याचार से लड़ने के लिए उस पर विजय पाने के लिए निश्चय करो। यह सन्देश है सभी महापुरूषों का।

यह वास्तविक शक्ति पूजा है और ऐसी शक्ति पूजा से ही विजय होती है। वैसे तो विजयादशमी हजारों आती रहती है, क्या हो जाता है? घर में अच्छा है तो बस खा-पी लिया और उसे मल-मूत्र बनाकर फेंक दिया। उससे क्या होता है। मिठाईयाँ खाने से क्या होगा?

विजय तो शक्ति में निहित है और शक्ति रहती है सात्विक साहस, सात्विक उत्साह एवं सात्विक धैर्य में। अगर शिवत्व प्राप्त करना चाहते हो तो शक्ति प्रथम अपेक्षित है।

तू है राम

एक व्यक्ति ने मुझे शेर सुनाया था-

संसार कयामत के दहाने पर खड़ा है,
रावण तो हजारों हैं, पर राम कहाँ है?

संसार विनाश के किनारे खड़ा है और बस इस संसार में रावण ही रावण है। राम कहाँ है? उसने एक दफे सुनाया, दूसरी दफे सुनाया तो मैंने कहा- बताऊँ राम कहाँ है? बोला बताओ। मैंने उसकी ओर अंगुली निर्देश करते हुए कहा, तू है राम! उठ जाग, तू अपने भीतर रहे राम को पहचान। रावणों से लड़ने के लिए राम कोई आकाश से उतर कर नहीं आयेगा। तुझे ही राम बनना है। तू अगर अपने विवेक को जागृत कर ले, ज्ञान की ज्योति को प्रकाशमान कर ले, कुछ अच्छा काम कर ले तो तू ही राम

है। राम को और कहाँ ढूँढना है? राम को निमन्त्रण नहीं देना पड़ेगा कि राम आओ। निमन्त्रण देते फिर रहे हैं। महावीर को भी निमन्त्रण देते हैं लोग। ऐसे तो कहते हैं आते नहीं है। लेकिन भजन ऐसे बन गये हैं कि महावीर आओ। लेकिन उनका सन्देश है कि प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं राम बनकर, महावीर बनकर उठने की जरूरत है। आओ, आओ कहकर निमन्त्रण देने की जरूरत नहीं है।

कर्मवीर बनो

दुर्भाग्य है कि हम बौने होते चले जा रहे हैं। हमारे विचारों में एक बात घर कर गई है कि हम निरन्तर हीन-क्षीण होते जा रहे हैं; क्योंकि यह कलियुग है, कोई भी बुराई की बात सुन लेते हैं गाँवों में तो प्रायः हर व्यक्ति के जबान पर होता है- यह नहीं होगा तो क्या होगा? कलियुग जो आ गया है। याने कलियुग में ऐसा ही होगा। कहीं किसी की हत्या हो जाय, बाप बेटे में झगड़ा हो जाय, भाई-भाई में, पति-पत्नी में झगड़ा हो जाय तो कहते हैं भाई कलियुग है यह। इसका अर्थ है कि सारे दुनिया के पापाचारों को, अत्याचारों को, गलतियों को हमने कलियुग के नाम पर स्वीकार कर लिया। कितनी दीन मनोवृत्ति है यह। जिस देश की, जिस समाज या धर्म परम्पराओं के विचार छोटे तथा बौने होते चले जायेंगे उनका क्या विकास होगा? हमारे यहाँ कलियुग का वर्णन करते हुए कहा है कि आदमी बौने होते-होते मुंड़ हाथ के हो जायेंगे। यहाँ तक कि बिलस्तियाँ हो जायेंगे। बड़ा मजेदार वर्णन है कलियुग का, हमारे ह्रास का, हमारी क्षीणता का। शरीर का बौना होना या बड़ा होना अलग चीज है लेकिन जो लोग विचार से बौने हो जायेंगे, जो कर्म से बौने हो जायेंगे, जो अपने साहस एवं उत्साह से बौने हो जायेंगे तब वे बौने क्या कर सकेंगे? कुछ नहीं। इसलिए आवश्यक यह है कि हम अपने अन्दर उत्साह को बढ़ायें। भगवान् महावीर कहते हैं केवल वचनवीर मत बनो। **"वायावीरिय मेत्तेण समासासेन्ति अप्पणो।"** कर्मवीर बनो। कुछ काम करो। उन्होंने यह नहीं कहा कि केवल पूर्वजों के ही गुणगान करते रहो। गुणगान करो जरूर लेकिन उससे कुछ प्रकाश लो और प्रकाश लेकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करो। जब तक कि तुम उन सन्देशों को जो तुम्हारे जीवन के लिए दिये गये थे उसमें से देश काल के लिए जो थे उन्हें छांट कर अलग कर दो और जो शाश्वत सन्देश है उन्हें अपने जीवन में उतारो। शाश्वत के लिए न कोई देश होता है और न काल होता है। बाह्य कुछ नियमावलियाँ वे देश काल से बँधी होती है। इसलिए शास्त्र जब पढ़ो तो जरा छांटते जाओ, देश काल के अनुसार जो नियम बने उन्हें अलग छांटो और शाश्वत सन्देश है उन्हें अलग से रखते जाओ। तथा वे जो शाश्वत सन्देश है उन्हें जीवन में उतारने के लिए यत्नशील रहो। यह दृष्टि महत्त्वपूर्ण है इसमें से हमारी यात्राएँ आगे

बढ़ेंगी। विकास के शिखरों की ओर गति होगी।

हर आत्मा परमात्मा है

हमारे मुस्लिमदास सन्त इकबाल ने कहा था, मुस्लिम क्या होता है? जब दार्शनिक मस्तिष्क होते हैं उस वक्त अलग-अलग पंथों की सीमाएँ अपने आप ही टूटकर अलग हो जाती है। कहा था उन्होंने-

खुदी को कर बुलंद इतना
कि हर तहरीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे,
बता तेरी रजा क्या है?

खुदा जब तहरीर याने भाग्य लिखे तो बन्दे से पूछे कि तेरी क्या इच्छा है? वही मैं लिख दूँ। लेकिन कब? जब स्वयं को, अपनी अन्दर की उस शक्ति को इतनी ऊँचाई पर ले जाय कि ईश्वर पूछे भक्त से कि बता क्या लिखूँ? कोई मुसलमान ऐसा कह दे? महत्त्वपूर्ण है यह बात। जब तक कि हम इस प्रकार की शक्ति का जागरण न करेंगे तब तक उन्नति होगी नहीं कभी। राम तू ही है। हर व्यक्ति अपने अन्दर सोये राम को जगायें और शक्ति के स्त्रोत जो बन्द पड़ गये हैं उनके द्वार खोल दें तो भगवान् महावीर ने कहा था 'हर आत्मा परमात्मा है।' हर जन जिन है, जिन याने विजेता है। शब्द बड़ा महत्वपूर्ण है जो अपने अन्दर के विकारों को जीतता है वह विजेता होता है।

हर नर नारायण है। यह शाश्वत सन्देश है। यह सन्देश देश काल परिस्थिति के अनुसार नहीं बोला गया है। अमुक प्रकार का छापा तिलक माला, पूजा, दिशा का महत्त्व, देश कालानुसार है; लेकिन विकारों का विजेता होगा वही बुद्ध होगा। बिना विजेता बने बुद्ध नहीं होता। पहले खुद जिन होते हैं और दूसरों को भी जिन होने का सन्देश देते हैं। खुद बुद्ध होते हैं और दूसरों को बोधित करते हैं। खुद मुक्त होते हैं। यह हमारी विजय की संस्कृति है। खुद मुक्त बनो बन्धनों से। खुद समस्याओं से मुक्त बनो समस्याओं को तोड़कर फेंक दो।

कलियुग एवं सतयुग विचारों में है

काल का कोई अर्थ नहीं है कि कलियुग आ गया है अब तो रोना ही रोना है। मैं पूछता हूँ कि सारा कलियुग भारत पर ही आ गया है क्या? और भी तो देश है। वो क्या थे? क्या स्थिति थी? इतिहास साक्षी है उनकी क्या भूमिका थी और उस समय भारत किस भूमिका पर किस ऊँचाई पर था? तो कलियुग ने आकर हमारे यहाँ ही ठोकर लगाई क्या? दूसरी जगह उसे नहीं मिली? दूसरी जगह सतयुग आ गया और हमारे यहाँ कलियुग आ गया? कैसे हुआ ऐसा? सारा भूमण्डल तो एक ही तरह का है। कुछ नहीं। विचारों का कलियुग है और विचारो का ही सतयुग है। इस प्रकार विचारों का जब कलियुग आ जाता है तब पतन होना शुरू होता है और विचारों में जब सतयुग आता है तब विकास होना शुरू होता है।

शक्ति अनन्तभुजा है

इसी दृष्टिकोण से आज की विजया दशमी पर शक्ति का महत्त्व समझना होगा। शक्ति है ज्ञान। शक्ति है विचार। शक्ति है कर्म। शक्ति का एक रूप नहीं है। वह तो सहस्त्रभुजा देवी है। सहस्त्र का मतलब हजार ही नहीं, सहस्त्र का मतलब अनन्त। वह अनन्तभुजा देवी है। उन सारी शक्तियों को जागृत करना है और जब वे शक्तियाँ जागृत हो जाती है तब विजया द्वार पर आकर खड़ी हो जाती है। आज जो राष्ट्र में हम अपनी शक्ति को, अपने स्वत्व को भूल गये हैं और अपेक्षा रखते हैं दूसरों से। सरकार यह नहीं करती, उसे यह करना चाहिए। वे लोग यह नहीं करते लेकिन कोई यह नहीं पूछता अपने आपको कि तू क्या नहीं करता? परिवार में पुत्र कहे पिताजी कुछ नहीं करते। पिता कहे नालायक बेटा कुछ करता नहीं। बड़ा भाई छोटा भाई से कहे निठल्ला बैठा खा रहा है। पति-पत्नी, माँ-बेटी, सास-बहू लड़ती रहे कि तू नहीं करती। पूछना है अपने आपसे से कि मैं क्या करता हूँ? जब यह जागरण आयेगा तब जाकर शक्तिपूजा सार्थक होगी। तब हमारे विजयपर्व सार्थक होंगे। यह विजेता की भूमि है, जिन की भूमि है। जिन याने विजेता। यहाँ का सन्देश है कि अपने विकारों पर अपनी दुर्बलताओं पर, अपनी दीनता व हीनता पर विजय प्राप्त करो और दूसरों के लिए भी विजय प्राप्ति का पथ प्रदर्शित करो। उठो, जागो और महान् पुरूषों का सन्देश लेकर आगे बढ़ो। **उद्यानं ते नावयानं।** तुम शिखरों पर चढ़ने के लिए हो। घाटियों में पड़े-पड़े रोने के लिए नहीं हो। यह सन्देश है हमारे महापुरूषों का।

यह वह सन्देश है जो देश काल परिस्थिति के अनुसार किये गये विधि-निषेधों को आज के देश काल परिस्थिति के अनुरूप ढालकर जीवन में उतारने की शक्ति प्रदान करता है तथा खुद अपने जीवन की समस्याओं से पार होकर दूसरों को भी पार कराने की ऊर्जा विकसित करता है। सन्देश है इस पर्व का- उठो, जागो और विजय प्राप्त करो।

दीप पर्व

- आचार्य चन्दना

एक छोटा-सा दीया जब जन्म लेता है घोर अंधेरे में तो बदल देता है अंधेरे को प्रकाश में। थिरकता रहता है निरन्तर वह अपनी ही बाती पर। जलाता है स्वयं को क्षण-प्रतिक्षण प्रकाश बांटने के लिए। धो देता है अशेष कालिमा अंधेरे की और कर देता है उज्ज्वल उसका मुख।

देकर अपनी भास्मान स्पर्शदीक्षा कर देता है आत्मवत् अनगिनत दीपों को प्रकाशित। प्रकाश के उपासक भारतवासी इसे मंगलदीप कहते हैं और अखण्डदीप भी कहते हैं। जब दिवाली की रात आवलीबद्ध दीपों की असंख्य-असंख्य पंक्तियाँ यत्र-तत्र-सर्वत्र जगमग-जगमग कर उठती हैं तो तीर्थंकर महावीर के निर्वाण कल्याणक को आलोकित कर देती हैं।

भक्त कह उठते हैं– **"दीपोऽपरस्त्वमसिनाथ! जगत् प्रकाशः"**

तीर्थंकर महावीर दीपक की भांति अंधकार के साथ संघर्ष किये बिना चुपचाप उसे प्रकाश में बदल देते हैं। बिना हिंसा का घटाटोप किये भव्यजीवों के मोहान्धकार को वीतरागता में परिवर्तित कर देते हैं।

संसार के अन्धकार के साथ संघर्ष या हिंसा नहीं, किन्तु अंधकार को प्रकाश में विलीन करने के लिए प्रेमपूर्ण और मौन प्रयास ही करना होता है।

आज आवश्यकता है प्रत्येक गांव, प्रत्येक घर और प्रत्येक व्यक्ति के दिल में प्रेम और करुणा के दीप प्रज्वलित करने की। जो संसार का ताप, संघर्ष, भय तथा अशान्ति को मिटा सके और सुख, शान्ति स्वास्थ्य एवं समृद्धि का प्रकाश फैला सके।

2022 की 5 नवम्बर से 7 नवम्बर तक तीर्थंकर महावीर विद्यामंदिर वीरायतन पालीताणा में शांतिलाल मुथा फाउंडेशन पुणे द्वारा त्रिदिवसीय मूल्यवर्द्धन प्रशिक्षण शिविर सानंद संपन्न हुआ। इसमें तीर्थंकर महावीर विद्या मंदिर के शिक्षकों के साथ अन्य अनेक स्कूलों के शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया। और इस आयोजन के लिए उन्होंने तहे दिल से आभार मानते हुए हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की।

अनेकान्त है मार्ग

-आचार्य चन्दना

कर्म, भक्ति और ज्ञान पृथक्-पृथक् नहीं है, एक ही है। जैसे दीपक, प्रकाश और उष्मा। कोई कर्म मार्ग को अलग मानकर चलते हैं तो कोई भक्तिमार्ग को श्रेष्ठ मानते है और कुछ लोग कहते हैं कि ज्ञान ही है एकमात्र श्रेष्ठमार्ग। भगवान महावीर की दृष्टि में तीनों का समन्वय है मोक्ष का मार्ग। तीन अलग-अलग नहीं किन्तु मिलकर एक मार्ग है। केवल भक्ति को मार्ग मान लेना या केवल कर्म को मोक्ष का मार्ग बताना अथवा अकेले ज्ञान को ही मार्ग कहना एकान्तवाद है, अज्ञान है। महावीर अनेकान्त की स्थापना करते हैं, जोड़ते हैं, टुकड़ों में नहीं खोजना है मोक्ष, अखण्डता में है मोक्ष। उनका संदेश है कि ज्ञान, भक्ति और कर्म तीनों मित्रवत हाथ में हाथ डालकर, कंधे से कंधा मिलाकर कदम दर कदम चलेंगे तो मोक्ष की मंजिल तक पहुँच सकेंगे।

"समक् दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्षमार्गः" ज्ञान, दर्शन और चारित्र तीनों मिलकर मोक्ष का एकमार्ग है। जहाँ दर्शन है वहाँ निश्चित रुप से ज्ञान और चारित्र है। जैसे जहाँ प्रज्वलित दीपशिखा है वहाँ उष्मा और प्रकाश का अस्तित्व होगा ही।

जैसे मिश्री की डली में मिठास भी है, वजन भी है और आकार भी है। ये तीनों गुण मिश्री के हर कण में विद्यमान है। ऐसा नहीं कि उसके एक हिस्से में मिठास, दूसरे हिस्से में आकार और तीसरे हिस्से में वजन हो। उसका एक छोटा-सा कण भी मुंह में लेते हैं तो उसमें मिठास के साथ वजन और आकार भी आ जाता है। तीनों चीजें सम्पूर्ण रूप से एक-दूसरे में ओतप्रोत है।

दीपोत्सव का महापर्व

- उपाध्याय अमरमुनि

भारत के हजारों-हजार पर्वों की मुक्तामाला का सुमेरु है दीपोत्सव। भारतीय त्योहारों का शिरोमणी है यह पर्व। दीपों का पर्व होने के कारण ही इसे दीपोत्सव या दीपावली कहते हैं। दीपावली का यह पर्व संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक होते हैं पर्व स्मृति ले आता है, उस महत्त्वपूर्ण घटना की जो विश्वात्मा महाप्रभु महावीर के महापरिनिर्वाण की घटना है। इस दिन अनन्त की यात्रा करनेवाले अनन्त ज्योतिर्मय रूप की स्मृति हमारे मन मन्दिर में जाग उठती है। उस विराट आत्मा का स्मरण हो आता है। जिसने उस परम लक्ष्य को प्राप्त कर लिया था। जिसके आगे और कोई लक्ष्य नहीं है। उसी महत्त्वपूर्ण लक्ष्य की जब अमावस्या का घनघोर अन्धकार चारों ओर हो, कालिमा हो, उस भयानक अन्धकार के बीच इन नन्हें दीपकों की झिलमिलाती रोशनी हमें अपने भीतर के अनन्त प्रकाश की स्मृति देती है।

एक दीप प्रज्वलित होता है और प्रज्वलित होने पर वह अकेला नहीं रहता। अगर कोई दूसरा दीप उसे स्पर्श करता है तो वह उसे भी प्रकाशवान बना देता है। दीप से दीप जलकर दीपावली बन जाती है।

भगवान् महावीर का एक ऐसा आध्यात्मिक दीप प्रज्वलित हुआ था इस धरा पर कि वह जिस ओर गया उधर दीप से दीप जलते गये। जिसने भी उस दीप का स्पर्श किया वह प्रज्वलित हो उठा।

भारतवर्ष की हर परम्परा में सूर्य प्रकाश के देवता के रूप में प्रतिष्ठित है, उसे बहुत महिमा मिली है। किन्तु वह केवल दिन का ही प्रकाशक है। रात में तो वह अस्तंगत हो

जाता है। तब रात के उस अन्धेरे में कौन प्रकाश देता है? चाँद भी बढ़ता घटता रहता है। अमावस्या को तो वह बिल्कुल गायब हो जाता है। एक भी उसकी कला नजर नहीं आती। किन्तु दीपक ऐसा प्रकाशकर्त्ता है, जो कभी धोखा नहीं देता। क्योंकि वह हमारी धरती का दीपक है। वह हमारे पुरुषार्थ का प्रतीक है। रात उजली हो या काली, अमावस्या की हो या पूर्णिमा की, हमारे पुरुषार्थ की प्रकाशक शक्ति के रूप में दीपक सर्वदा हमारे साथ चलता है। इसीलिए कहा गया है–

"बेशक अन्धेरी रात है,
पर दीपक जलाना कब मना है?"

अंधेरी रात तो है बेशक, मान लिया। प्रकृति ने सारे भू-मण्डल पर अंधेरा बिछा दिया। सघन अन्धेरा हो गया चारों ओर, फिर भी घबराहट क्यों होगी? दीपक जलाने का पुरुषार्थ तो तुम्हारे अपने पास है। दीपक जलाया जाता है, और वह जलता रहता है। तथा अन्धेरे से संघर्ष करता रहता है। इतना ही नहीं, वह अपने जैसे अनेकानेक साथियों को

भी खड़ा कर देता है। जो उसकी तरह ही जगमग-जगमग करने लगते हैं, तथा अन्धेरी रात को प्रकाशित करने का एक महाप्रयास शुरु कर देते हैं।

दीपक को प्रज्वलित होने के लिए भगवान् महावीर का समन्वयवाद आवश्यक है। समन्वयवाद अर्थात् अलग-अलग अस्तित्वों का मिलकर एक हो जाना। दीपक के लिए दीपाधार की आवश्यकता होती है फिर उस दीपाधार में तेल या घृत की आवश्यकता होती है और तेल या घी में सराबोर बाती का अस्तित्व भी होना चाहिए। तभी अग्नि का स्पर्श उसे दीपक की संज्ञा देता है। जब तक अग्नि का स्पर्श नहीं होता, तेल और बाती दोनों ही अधूरे रह जाते हैं। न ही तेल काम करता है और न बाती ही काम कर पाती है। ज्यूं ही तेजस् का स्पर्श होता है, ज्योति जगमगाने लगती है। और तेल के साथ बाती घण्टों क्या प्रहरों तक प्रज्वलित होती रहती है। इस प्रकार तीनों के समन्वय से दीपक की ज्योति प्रज्वलित होती है।

यह ज्योति हमें एक सन्देश देती है कि हम जिस धरती पर रह रहे हैं, जिस समाज में रह रहे हैं, जिस परिवार में रह रहे हैं, सबका अस्तित्व यद्यपि अलग-अलग है, किन्तु प्रेम की ज्योति अगर प्रज्वलित है, तो सब एक है। सब के दुःख, कष्ट समस्याएँ आपत्तियाँ दूर होकर सुख और शान्ति का साम्राज्य कायम हो

सकता है। लेकिन कब? जब समन्वय हो, हृदय मिले हो, विचार से विचार मिले हो, मन में प्रेम की ज्योति प्रज्वलित हो तभी यह सुख का अखण्ड साम्राज्य स्थापित हो सकता है।

ऊपर उठने का संकल्प ही बाती है। प्रेम तेल है और हमारा महत्त्वपूर्ण भाव तेजस् है। तेज बना रहना चाहिए। हमारा मानसिक तेज, हमारी कार्य करने की शक्ति का तेज, हमारे विचारों का तेज, हमारी संस्कृति का तेज प्रज्वलित रहना चाहिए। यदि वह प्रज्वलित है तो फिर अन्धकार समाप्त होता चला जाता है तथा ज्ञान का प्रकाश विस्तार पाता है।

भगवान् महावीर को 'लोगपइवाणं' कहा है। लोक के प्रदीप हैं वे। दीप ही नहीं प्रदीप हैं क्योंकि उन्होंने ज्ञान का दीप जलाया– "प्रज्वलितों ज्ञानमयः प्रदीपः" उनके ज्ञानदीप से कितने ही अन्धकार पूर्ण जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैला। कितने-कितने अन्धविश्वासों के गहरे घने अन्धकारमय जीवन ज्योतिर्मय हुए। दुःख में, शोक में पड़े हुए जीवन महलों से लेकर झोपड़ियों तक सुख और सन्तोष से जगमगा उठे और सारी धरती ने उनके ज्ञान की किरणों का प्रकाश पाया। कहा है आचार्य ने–

देह ज्योतिषि यस्य मज्जति जगत्
दुग्धाम्बुराशाविव।
ज्ञान ज्योतिषि च स्फुरत्यतितरां
ओम्भूर्भुवः स्वस्त्रयी।
शब्द ज्योतिषि यस्य दर्पण इव
स्वार्थाश्चकाशन्त्यमी।
स श्रीमान्नमरार्चितो जिनपतिः
ज्योतिस्त्रयायास्तु वः॥

तीन ज्योतियाँ हैं। प्रथम है देह ज्योति। भगवान् महावीर का दिव्यरूप ऐसा था कि बस तेजःपुंज, जैसे कि सहस्त्ररश्मि सूर्य हो। उस दिव्य देह के अस्तित्व में अन्धकार नष्ट हो जाता था। दूसरी ज्योति ज्ञान की ज्योति जो कि हमारे मन के अन्धकारी को दूर करती है। अनार्यभाव के अन्धेरे में पड़ा हुआ हमारा चित्त, हमारी चेतना, हमारा आन्तरिक जगत् सब को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित कर देती है और तीसरी ज्योति है वाणी की ज्योति। उनकी वाणी दिव्यवाणी है कि जिसने ज्योति का रूप लिया है और हजारों वर्ष के बाद आज भी वह वाणी दीप जला रही है, प्रकाश फैला रही है।

देह की तो सीमा होती है, भले ही वह

कितनी ही दिव्य हो। व्रजऋषभनाराच संहनन युक्त था प्रभु का शरीर, लेकिन वह देह ज्योति तो नहीं रही। उस शरीर को रखने के लिए हजारों-हजार देव और इन्द्र आकुल-व्याकुल थे। गणधर और आचार्य, साधु और साध्वी, श्रावक और श्राविका सबके मन में गहन आकुलता थी कि यह ज्योति प्रज्ज्वलित रहे, यह तेज बना रहे। लेकिन वह रहा नहीं। हाँ, अब प्रभु की दो ज्योतियाँ स्थिर हैं। जो काल की गति के ऊपर गतिशील हैं। वे हैं ज्ञान की ज्योति एवं वाणी की ज्योति जिसे शब्द ज्योति कहा है।

जो वाणी उनके मुख से मुखरित हुई थी, उस दिव्यवाणी को गौतम ने सुना, सुधर्मा ने सुना, राजा श्रेणिक ने सुना और तो क्या लकड़हारे ने सुना, भिखारियों ने सुना सबके मन में ज्योति जगमगा उठी थी, उस वाणी को सुनकर। वह वाणी आज शास्त्र के रूप में उपलब्ध है। ढाई हजार वर्षों से वह वाणी यात्रा करती हुई आ रही है। उस ज्योति को हम अपने मन में बराबर संजोये रखने के लिए स्मरण करते हैं। आगे भी वह ज्योति प्रज्वलित होती रहेगी।

देह की ज्योति का मोह तो छोड़ना ही होगा। माना कि गणधर गौतम जैसे उच्चतम साधक को भी बहुत बड़ा आघात लगा था। जो चार ज्ञान के धनी थे, उनकी आँखों से भी आँसु बरस पड़े थे। अस्सी वर्ष की अवस्था में भी उनका मन व्याकुल हो उठा था।

लेकिन जब उनकी विचारधारा प्रभु की ज्ञान ज्योति और शब्दज्योति की ओर मुड़ी तब यह बोध प्रकट हुआ कि ज्ञान रूप में मौजूद हैं प्रभु, उनकी वाणी तो शब्दज्योति के रूप में मौजूद है। देह तो हम सुरक्षित नहीं रख सके। वह हमारे बस की बात नहीं थी। लेकिन ज्ञानदीप प्रज्वलित रखना एवं शब्ददीप प्रज्वलित रखना तो हमारे पुरुषार्थ का काम है।

हम जितने जागृत रह सकेंगे, उतना काम कर सकेंगे। माना कि मागधी भाषा है, बहुत दूर की भाषा है। कम से कम ढाई हजार वर्ष का यह भाषा का रूप है। भले ही समझ में जल्दी से न आये, लेकिन उसका एक सौन्दर्य है, उसका एक नाद है, उसके प्रति श्रद्धा का एक रूप है।

एक बालक गुलाब के एक फूल को खिला देखता है, उसे उसके नाम तक का पता नहीं होता कि कौन फूल है यह। लेकिन खुश होता है उस फूल को देखकर, लेना चाहता है उसे। क्योंकि उसके सौन्दर्य से आकर्षित होता है वह।

प्रभु की वाणी जो आज भी हमें सौभाग्य से प्राप्त है, और सुनने का सुअवसर मिला है। कहा है प्रभु महावीर ने "लाभालाभम्मि सन्तुट्ठे" लाभ हो चाहे अलाभ

हो, सुख हो चाहे दु:ख हो, ये लहरें तो आती हैं और जाती हैं, उठती है और गिरती है लेकिन सागर गरजता रहता है, हमें भी हर स्थिति में प्रसन्न रहना चाहिए।

महाप्रभु की वाणी आपने सुनी है। आपके लिए यह शब्द ज्योति प्रकाशमान रहे। अन्धकार आपके जीवन में आये ही न और अगर आये भी तो प्रभु के ज्ञान का दीप आपके हृदय में प्रकाशमान हो। उसके द्वारा आप अपने अन्धकार को दूर कर सके और अपनी यात्रा ठोकरें खाती हुई नहीं; बल्कि एक अच्छी तरह से प्रकाश में दौड़ती हुई आगे बढ़ाते जाय।

ज्ञान ज्योति के प्रकाश में आपका जीवन भी ज्योतिर्मय हो, आपका विचार भी ज्योतिर्मय हो, आपका कर्म भी ज्योतिर्मय हो तथा आपके सम्पर्क में आनेवाले जो भी हों उनका भी मन अन्धकारी से दूर हो, स्वार्थों से दूर हो एवं एक निर्मल ज्ञान की ज्योति आपके जीवन में प्रज्वलित हो। यही शुभ भावना।

वीरायतन नी सेवा खरेखर अनुपम छे

-साध्वीश्री श्रुतरत्नाश्रीजी, पालिताणा

हमारा चातुर्मास कस्तुरधाम पालीताणा में था। अचानक एकदिन हमारी स्थविरा साध्वी पूज्यश्री शाशनरत्नाश्रीजी की आंखों में तकलीफ हुई और उन्हें दिखना बन्द हो गया। तुरन्त डॉक्टर को बताया तो उसने जल्द से जल्द ऑपरेशन की सलाह दी और भावनगर या अहमदाबाद ले जाने को कहा। पुन: दूसरों आई स्पेशालीस्ट डॉक्टर को बताया उसने भी ऑपरेशन की ही सलाह दी। बड़ी समस्या थी भावनगर या अहमदाबाद ले जाने की। लेकिन बड़ा सकुन मिला यह जानकर कि "श्री आदिनाथ नेत्रालय वीरायतन पालीताणा" में अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ आंखों के हर तरह की सर्जरी बड़ी सफलता पूर्वक होती है। हम वहाँ पहुँचे। वहाँ के डॉ. चिंतन जो रेटिना स्पेशालीस्ट है उन्होंने बड़ी श्रद्धा के साथ सफल सर्जरी कर दी।

विशेषता यह थी कि वहाँ पद्मश्री आचार्य चन्दनाश्रीजी की शिष्या डॉ. साध्वीश्री चेतनाजी

एवं साध्वीश्री संघमित्राजी खड़े पैरों हमारे साथ रही। डॉक्टर की सलाह के अनुसार हम वहाँ एक रात रुके। साध्वी जी ने सारी सुविधा व्यवस्था बड़े स्नेह सद्भाव के साथ की। और उनके मार्गदर्शन में हॉस्पिटल में कार्यरत डॉक्टर से लेकर सफाई कर्मी तक सब के सब का व्यवहार एक परिवार की तरह था। धन्य है श्रद्धेय आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी कि उनकी यह अनुपम सेवा भावना लाखों लोगों के जीवन रोशन कर रही है।

अपना किरदार

–प्रतिभा बोथरा

आसान नहीं होते जिन्दगी में निभाने
इतने सारे किरदार....
कुछ पसंद के कुछ बिना पसंद के,
हर किरदार में मुस्कुराते रहना
यार .....
कुछ मन की इच्छाएँ- कुछ दबी
ख्वाहिशें कुछ चाहतें करते जाना
दर किनार ....
हम चलते रहते बस! चलते रहते
बनाकर खुद को औरों का
हकदार ....
नाम सुर्खियाँ, वाहवाही बटोरने
झेलते जाते अपने दिल पर
वार ....
सही गलत कुछ पता नहीं बस
मान लेते इसी को जिन्दगी का सार ....
चलो थोड़ा खुद को परखें
खुद को पहचाने खुद को बना ले
इतना दमदार ....
ना मारे मन को, समझे जीवन को
हर कसौटी के खरे हो
कलाकार ....
है जिन्दगी खुबसूरत रंगमंच है
दोस्तों कहलाए हम उम्दा
अदाकार ....
फिर परदा गिरे या उठे, परवाह नहीं,
बस याद रहे निभाया
हर किरदार ....

राजनैतिक शुचिता से ही देश में सुशासन संभव

विश्व अहिंसा दिवस के अवसर पर आलेख

अहिंसा की परिभाषा

-रिखब चन्द जैन
संस्थापक- भारतीय मतदाता संगठन

भारतीय संस्कृति अहिंसा में वास करती हैं। पूरे विश्व में सदियों से भारत अहिंसा का संदेश देता रहा है। वेद, पुराण, आगम साहित्य और अनेकानेक शास्त्र, धर्म, साहित्यक रचनायें, अहिंसा के ऊपर सदियों से प्रस्तुत की गई है। राम हो, कृष्ण हो, महावीर हो, बुद्ध हो, गुरूनानक हो, महात्मा गाँधी हो, विनोबा भावे हो हर कोई महापुरुष भारत में अहिंसा का संदेश, वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश देते रहे हैं।

महाभारत का युद्ध समाप्त होने पर वेदव्यास जी ने पहली बार **'अहिंसा परमो धर्मः'** का उद्घोषि किया। जब-जब मनुष्य को युद्ध के बाद अपराध बोध में होता है चाहे वह सम्राट अशोक थे, चाहे वह महाभारत के कौरव-पांडव थे, चाहें रावण था प्रत्येक युद्ध के बाद चाहे प्रथम विश्व युद्ध हो, द्वितीय विश्व युद्ध हो और अन्य लड़ाई की घटनाएं हो उसके बाद लड़ने वालों के मन में एक स्वाभाविक मानवीय भावना उत्पन्न होती है, चाहे हारने वालों हो या जीतने वाला हो, कहते है कि युद्ध कोई समाधान नहीं है। अहिंसा ही शांति दे सकती है। इसी तर्ज पर सम्राट अशोक ने पूरी दुनिया में महात्मा बुद्ध के अहिंसा के संदेश को, शांति के संदेश को, मानव-मानव के भाई-चारे के संदेश को अनेक देशों की चारों दिशाओं में अपने स्वम् के पुत्र-पुत्रियां इत्यादि को कलिंग युद्ध के बाद भेजा। प्रथम युद्ध के बाद वर्ल्ड लीग बनी, लेकिन शांति स्थापित करने के लिए कोई खास काम नहीं

कर पाई। दूसरा महायुद्ध शीघ्र ही 25-30 वर्षों बाद दुनिया के सामने भयंकर रुप में खड़ा हो गया। द्वितीय युद्ध के समाप्त होने पर सारे विश्व के राष्ट्र अध्यक्षों ने राजा, बादशाह, सभी ने बैठ करके महावीर के संदेश पर, भारतीय संस्कृति की भावना के अनुसार संयुक्त राष्ट्र संगठन (UNO) की स्थापना की।

संयुक्त राष्ट्र संगठन (UNO) के संविधान में और संयुक्त राष्ट्र संगठन (UNO) की सोच में एक-एक कण में, एक-एक शब्द में भारतीय संस्कृति की अहिंसा **'वसुधैव कुटुम्बकम'** मानव-मानव के भाईचारे की बात ही है।

वैसे तो मानव प्रकृति से ही अहिंसक सोच और अहिंसक मानिसकता का प्राणी है। अगर वह अहिंसक मानसिकता का प्राणी नहीं होता तो इस दुनिया में कभी खेती ही नहीं होती। कभी वन रक्षा, फलों के बगीचे नहीं होते। सिर्फ जानवरों की तरह मानव तथा प्राणी भी सिर्फ और सिर्फ शिकार करते रहते और बिना अहिंसा की भावना के ,बिना खेती के, बिना बस्ती बसाने के, बिना संस्कृति के शुरुआत के आज की यह अहिंसक सभ्यता का दौर अब तक दुनिया के किसी कोने में दिखाई नहीं देता।

मनुष्य की रचना शाकाहारी प्राणी, अहिंसक प्राणी की तरह तो है लेकिन मानसिक उद्घोष क्रोध, द्वेष उसे आग उगलने के लिए मजबूर कर देते है। वह आपस में अपने अधिकार के लिए, दूसरों पर क ा करने के लिए, दूसरों को गुलाम बनाने के लिए लड़ने-लड़ाने, युद्ध करने के लिए तैयार हो जाता है। अगर मनुष्य हिंसक होता तो उसके लम्बे दांत शेर जैसे होते, जीभ से लार टपकती, पंजे शेर जैसे होते, शेर घास नहीं खाता तो मनुष्य को किसी प्राणी को मार कर, किसी मनुष्य को मार कर उसको नुकसान पहुंचाने, उससे लड़ने, उसको भोजन करने के लिए मारना, मनुष्य के शरीर में ऐसे औज़ार प्रकृति ने नहीं दिए हैं। जिस तरह मानव है उसी तरह प्रकृति में अनेक प्रजातियां घोड़ा ले लो, ऊँट ले लो, बैल है, गायें हैं, बकरी है, भेड़ है, कबूतर है और गेंडा है, अनेक प्रजातियां ऐसी हैं जो सिर्फ और सिर्फ अहिंसक वृति से, अहिंसक तरीके से जीवन जीते हैं और शाकाहारी प्राणी होते हैं।

अहिंसा का नाम आता है तो जैन धर्मावलंबियों, जैनधर्म, जैनधर्म के तीर्थंकर भगवान महावीर, जैन संतों को लोग तुरंत अपनी स्मृति ले आते हैं। महात्मा गाँधी को भी अहिंसा का नाम लेने पर तुरंत स्मृति में ले आते हैं। हालांकि मनुष्य प्रकृति से अहिंसक है और

भारतीय संस्कृति में पुराने काल से अहिंसा भारतीय संस्कृति की आत्मा है। अहिंसा भारतीय संस्कृति की प्राण है और इसलिए भारत के सांस्कृतिक विरासत के रुप में दुनिया, पूरा विश्व, संयुक्त राष्ट्र संघ महात्मा गाँधी की जन्म जयंती पर 2 अक्टूबर को प्रति वर्ष अहिंसा दिवस के रुप में मनाती है।

भगवान महावीर के बाद, अशोक के बाद शायद और सिर्फ महात्मा गाँधी ही एक महापुरुष हुये हैं जिन्होंने अहिंसा के बल पर ब्रिटिश सरकार को उपिनवेशवादी सोच से नीचे उतारा और सिर्फ भारत ही नहीं भारत के साथ अनेक कोलोनियल देशों को उन्होंने आज़ाद करना शुरू किया। अहिंसक विधि से ब्रिटिश सरकारों की फौज का महात्मा गाँधी जी ने सामना किया। सत्याग्रह ही के रुप उन्होंने ब्रिटेन की सरकार पर उनकी सोच पर दबाव डाला और भारत को स्वतंत्र करवाया। कई लोग इससे सहमत नहीं हो सकते है। कईयों का कहना है कि भारत को आज़ादी भगत सिंह, मंगल पांडेय, अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ, अमर चन्द बाँठिया, चन्द्रशेखर आज़ाद इत्यादि ऐसे अनेक शहीदों के बल पर और नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के क्रांतिकारी भारतीय आज़ाद हिन्द फौज की कार्यवाही से ब्रिटिश सरकार को सोच में आया कि अब भारत पर राज नहीं कर सकेगे, अत: उन्होंने भारत को भारत को आज़ाद किया, न कि महात्मा गाँधी जी की अहिंसा से। इस विचार का आंशिक मूल्य हो सकता है लेकिन सच्चाई यह है कि जितने लम्बे अरसे से महात्मा गाँधी जी ने भारत के आज़ादी के संग्राम को संभाला और दिशानिर्देश दिया स्वयं उसमें आगेवान बने और अनेकोनेक भारतीय आज़ादी के दीवानों को जोड़ा तो उसका कोई ब्रिटिश सरकार पर भारत को आज़ादी देने में कोई प्रभाव न पड़ा हो यह नकारना भी बिलकुल अनुचित होगा।

भारत ही नहीं महात्मा गाँधी के रास्ते चल के, मार्टिनलूथर नाशीर ने मिस्त्र इजिप्ट में, नेल्सन मंडेला ने साउथ अफ्रीका में और ऐसे अनेक देशों में गांधीवादी नेताओं ने मानवता को राहत दिलाने में, गुलामी की बेड़िया तोड़ने में, रंग भेद को दूर करने में, नर-नारी के बीच में भेदभाव को खत्म करने में, गरीबी मिटाने के लिए, समानता समरसता लाने के लिए और अनेक सामाजिक मुद्दों पर भी अहिंसक रुप से सत्याग्रह करके, सत्याग्रही बन करके सफलतायें हासिल की। वो पूरे दुनिया के इतिहास में ऐसे सभी आंदोलनों में महात्मा गाँधी जी की अनुशरणता अहिंसा की अनुमोदना पूरी दुनिया करती है। लगभग प्रत्येक देश में कम से कम एक मूर्ति महात्मा

गाँधी की देश में सबसे प्रमुख स्थान पर स्थापित की जा चुकी हैं। यह संदेश देने के लिए वहां के नागरिकों को, वहां की सरकार को, कि वे सब अहिंसा के रुप में सरकार को चलाएं, अहिंसा को ध्यान में रखते हुये युद्ध से बचे, संघर्ष से बचे, केवल संभावपूर्ण व्यवहार रंग-भेद, लिंग भेद आदि सामाजिक समानता समरसता के लिए अहिंसा का अनुशरण करें।

अहिंसा का संदेश हमेशा मनुष्यों को सुख-शांति देता रहा है और दे रहा है और देते रहेगा। अभी हाल ही में पाकिस्तान के वर्तमान प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ ने अपने वक्तव्य में कहा है और भारत को सम्बोधित किया है कि युद्ध वो करना ही नहीं चाहते है, युद्ध कोई भी समस्या का समाधान नहीं है। अब वह परमानेन्ट तरीके से हमेशा के लिए पाकिस्तान युद्ध से परे रहना चाहता है और हिंदुस्तान के साथ संवाद के साथ मैत्रीपूर्ण भाई-भाई जैसा व्यवहार संबंध पुन: स्थापित करना चाहता है। यह शहवाज की नहीं पूरे पाकिस्तान के आवाम की आवाज़ उठी है और इसमें मोदी जी की राज्य व्यवस्था और मोदी जी का अहिंसा की उपासना भी पाकिस्तान के लोगों का दिल छू गई है। दुनिया के मुस्लिम देशों में भी, मुस्लिम राष्ट्र के प्रधानमंत्री भारत के मिनिषी लोगों से जानना चाहते कि विविधता से भरपूर भारत में कैसे शांति स्थापित रहती है। कैसे साम्प्रदायिक झंझटों से, दंगों से बचा रहता है। कैसे माइनॉरिटी के लोगों को पूर्णतया सुरक्षित रखते हैं। जबकि उनके अपने देशों में, अपने राज्यों में अलग-अलग फिरके आये दिन आपस में खूनी संघर्ष करते रहते है। अफगानिस्तान, ईरान, इराक, लीबिया, पाकिस्तान आदि अनेक मुस्लिम देशों में भी मुस्लिमों की विभिन्न फिरको में साम्प्रदायिक झगड़े, विध्वंस होते ही रहते है। उनकों भी लगता है कि धर्म कुछ भी हो, सम्प्रदाय कुछ भी हो, पंथ कुछ भी हो, सोच कुछ भी हो देश में घर-परिवार में अगर शांति, प्रेम, भाई-चारा, सुख या अमन चाहिए तो वो सिर्फ अहिंसा की सोच से, अहिंसापूर्ण व्यवहार से ही मिल सकता है और इसी वजह से इस सोच को और प्रत्येक देश के राज्य व्यवस्थापकों को, सेना के कमांडरों को और साधारण नागरिकों को यह संदेश देना आवश्क है कि विश्व अहिंसा दिवस मनाया जायें लेकिन उसका मतलब यह है कि जब तक अपनी सोच में, अपने व्यवहार में, अपने जीवन में अहिंसा का प्रवेश नहीं कराएंगे तब तक विश्व अहिंसा दिवस मनाने का उन्हें लाभ नहीं हो पायेगा।

एक तरफ पूरा विश्व भारत के अहिंसा के संदेश को अधिक से अधिक अपने व्यवहार में प्रयोग में लाना चाहता है उसी जगह हमारे

देश के नवयुवकों को, कुछ मनीषी लोगों को, बड़े-बड़े हिन्दू संगठनों को भ्रम है कि अहिंसा बुजदिली मात्र है। अहिंसा कोई शस्त्र नहीं है, अहिंसा से कोई दो दुश्मन देशों के साथ समाधान नहीं मिल सकता है। वो यही सोचते हैं कि पाकिस्तान या चाईना से या अन्य किसी देश से अगर भारत का संघर्ष है, खूनी संघर्ष होने की संभावना है तो क्या उसे अहिंसा के माध्यम से समाधान ढूंढना संभव है। शक्ति के उपासकों को इस देश में इस भ्रम में है कि अहिंसा बुजदिली है। बिना शक्ति के बिना अस्त्र-शस्त्रों के न हमारा कोई शत्रू डरता है और न हम किसी पर विजय प्राप्त कर सकते है। ऐसा सोचना भ्रमता की वजह से है। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यह सोच अनेक जैन परिवार के सदस्यों को भी, अनेक जैन धर्मावलम्बियों को भी, अनेक जैन गुरुओं को भी, संतों को भी, साध्वियों को भी, मनीषी लोगों को भी भ्रम है कि अहिंसा में तो हम चीटीं को भी नहीं मार सकते तो अहिंसा को मतलब हम किसी से युद्ध कैसे कर सकते है? कैसे हम तलवार टांग सकते है? अहिंसा का मतलब तो जैसे क्राइस्ट ने बताया कि एक तरफ कोई थपड़ मारे तो दूसरा गाल उसके हवाले कर दे, नहीं है। अहिंसा कमजोरी नहीं है, अहिंसा वीरता का शस्त्र है।

अहिंसा का मतलब है आप किसी पर आक्रमण नहीं करेंगे और भारत ने आज तक दुनिया में किसी भी देश में, किसी भारत के बाहर के राजा पर आक्रमण नहीं किया है तथा अपनी रक्षा के लिए, अपनी प्रतिरक्षा के लिए अगर कोई दूसरा देश उस पर बंदूक, टैंक, रॉकेट और अणुबम लेकर के खड़ा होता है तो भारत कभी उसका मुकाबला करने से पीछे भी नहीं रहा है। कुछ जैन धर्म के धर्मावलम्बी भी और भारत के कई मनीषी लोग शायद भूल गए है कि प्रभु महावीर के परिवार में भी चेटक ने युद्ध किया, नारी की रक्षा के लिए। कलिकाचार्य ने संत का परिवेश छोड़कर के बहन की रक्षा के लिए युद्ध किया और पुनः संत बने सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य जैन आस्था के होते हुये एवं सम्राट अशोक बौद्ध आस्था के थे, चाणक्य जैन आस्था के थे फिर भी प्रतिरक्षा के लिए युद्ध किये। और भी ऐसे अनेक प्रसंग आगम साहित्य में, जैन साहित्य में मिलेंगे प्रमाणिकता के साथी, अगर कोई आप पर हमला करते हैं अपनी रक्षा के लिए, अपने देश की रक्षा के लिए, अपने परिवार की रक्षा के लिए, अपने धर्म की रक्षा के लिए अगर आप हथियार उठाते है तो उसको हिंसा नहीं मानी जाएगी। वो सकंल्पित हिंसा नहीं है। अहिंसक हैं लेकिन अगर प्रतिरक्षा (अपने बचाव) के

लिए किसी को मारा और भारत तो क्या दुनिया के किसी भी देश में दंडनीय नहीं है। आत्मरक्षा के लिए हथियार उठाना, मर्डर करना अपराध नहीं माना गया। इसलिए अपनी रक्षा के लिए की गई हिंसा, हिंसा नहीं है। प्रतिरक्षा के लिए युद्ध करने में अहिंसक को मना नहीं है।

अभी कुछ समय पहले इसी प्रश्न का उत्तर देते हुए महामनीषी महान जैनाचार्य विद्यासागर जी महाराज ने कहा कि अहिंसा का मतलब संकल्प लेकर के किसी दूसरे के अधिकार को छीनने के लिए आक्रमण करना, लड़ना अहिंसा नहीं है यह हिंसा है। लेकिन अगर आपके प्रति या आपके देश के प्रति दुसरा व्यक्ति या दूसरा देश या दूसरी सेना ऐसा करती है और अपनी रक्षा के लिए आप हथियार उठाते है या हथियार का प्रयोग करते हैं, लड़ते हैं या खून करते है तो हिंसा नहीं है वो प्रतिरक्षा में की गई कार्यवाही है, अतः शक्ति के उपासकों किसी भी तरह से अहिंसा को गलत सोच से न जोड़ना अहिंसक व्यक्ति हथियार उठाएगा ही नहीं और उठाएगा तो अहिंसक नहीं रहेगा और मैं यह भी कहूंगा कि हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी का परिवार, वैष्णव परिवार है पूर्णरुप से अहिंसक है, उनकी दादी उनके चाचा जलाने वाली लकड़ी का गोदाम बनाने से बिक्री करने से मना किया क्योंकि उसके अन्दर छोटे जीव होते है जो कोई लकड़ी बेचोगे वो घर जा कर जलाएगा तो उसे हिंसा का आप लगेगा। इसलिए पाप का भागी नहीं होना है।

मोदी जी चाहे जैन हो या न हो अपने आपको शक्ति का उपासक कहे अच्छी बात है, देश के लिए वो सेना को हौसला बढ़ाये, सीमा पर जाकर सेना को निर्देशित करें उससे वो अहिंसक नहीं रहे ऐसा सोचना गलत है। वो पूर्णतयाः अहिंसक है। मैं यहाँ तक कह सकता हूँ कि वो जैन धर्मावलम्बी नहीं है लेकिन जैन धर्म की विशिष्ट ज्ञाता है जैन धर्म के नियमों पर चलने वाले है वे कर्म से जैन ही है। जन्म से वैष्णव है तो क्या हुआ। वैष्णव भी तो अहिंसा के मामले में जैन सोच के बराबर है। भारत में उद्गमित प्रत्येक धर्म अहिंसा के केन्द्र बिंदु पर अपनी सोच को प्रसार करते रहे हैं, और करते हैं, चाहे रामायण हो, चाहे महाभारत हो, चाहे वैद पुराण हो कोई भी साहित्य हो चाहे गुरु नानक जी का संदेश हो। मान्यवर अम्बेडकर जी ने भी जैन धर्म का गहन अध्ययन किया और बौद्ध धर्म का भी किया समीक्षायें की और हिन्दू धर्म का भी तुलनात्मक अध्ययन किया और उन्होंने बौद्ध धर्म को जोकि वो अहिंसक रुप में है जैन धर्म के समकक्ष ही है उसको ध्यान में रखा। अनुसूचित वर्गों को बौद्ध के

अनुसार चलने के लिए दीक्षायें दिलाई। डॉ. अम्बेडकर ने भारत के संविधान में अहिंसा के विचारों को एक-एक शब्द में उजागर किया है। भारत का संविधान, भारत की संस्कृति, भारत की धार्मिक, भारत के सभी धर्मों की या विशेषकर जैन धर्म की सभी सिद्धांतों का संविधान में खूब अच्छी तरह से प्रतिपादित किया है। यह जैन समाज, अहिंसक समाज और भारत के सभी धर्म के लिए विशेष रुप से एक बड़ी प्रेरणा की बात।

मैं अपनी बात इसी उम्मीद के साथ इस आलेख को पूरा करना चाहता हूँ कि प्रत्येक भारतीय शक्ति की उपासना करें लेकिन व्यवहार में वह अहिंसक रहे। अहिंसा कमजोरी और बुजदिलों का शस्त्र नहीं है। अहिंसा बलवान और विद्वानों का शस्त्र है। अहिंसा अपनी र ा में होने वाली हिंसा को वर्जित नहीं करती है। यही स्पष्टीकरण मैं देना चाहता हूँ, भ्रम दूर करना चाहता हूँ और अहिंसा की परिभाषा इसी तरीके से परिपूर्णता के साथ प्रत्येक विश्व के मानव को समझ में आ सके इसलिए इस आलेख को प्रस्तुत किया।

तीर्थंकर महावीर विद्या मंदिर के विद्यार्थियों द्वारा

रंगोली व सफाई कार्यक्रम

भगवान महावीर परिनिर्वाण की पावन स्मृतिरूप दीपावली पर्व के उपलक्ष में श्रद्धेय ताई माँ की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी "तीर्थंकर महावीर विद्यामंदिर पावापुरी वीरायतन" के विद्यार्थियों ने प्रभु महावीर निर्वाण भूमि जलमंदिर, गांव मंदिर तथा समवशरण मंदिर की तथा परिसर की सफाई बड़े उत्साह के साथ की।

और इसी अवसर पर पूज्य ताई माँ से ही प्राप्त जीवन संस्कारों को रंगोली के माध्यम से वीरायतन राजगृह के परिसर में सुन्दर कलात्मक रूप दिया।

स्मृतिपुष्प

रत्नागिरी श्री चन्द्रकला लुणिया का दिनांक- 13 अक्टूबर 2022 को संथारापूर्वक देवलोक गमन हुआ। वे स्वनाम धन्य श्री प्रेमकुंवर कटारिया जिन्हें वीरायतन परिवार आत्मीयता से 'मासीजी' संबोधन से संबोधित करता था उनकी तृतीय पुत्री थी। और पद्मश्री अवार्ड से सम्मानित आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी 'पूज्य ताई माँ' की छोटी बहन थी। वे केवल शरीर से ही नहीं वाणी तथा व्यवहार से भी सौन्दर्य एवं माधुर्य सम्पन्न थी।

किशोरावस्था में श्री चन्द्रकला ने कुछ वर्षों तक अपनी दीक्षित बहन 'पूज्य ताई माँ' की सेवा में शास्त्राभ्यास के साथ आध्यात्मिक जीवन जीया था। वह समय ऐसा था जब धर्मस्थानकों में प्रकाश के साधन निषिद्ध थे। रात अंधेरे में अध्ययन की सुविधा न होने से 'ताई माँ' बेचैन रहती। तब उन विकट घड़ियों में तेरह वर्ष की सरल किन्तु साहसी चन्द्रकला ताई माँ की श्रुताराधना में कुशलता पूर्वक सहयोगी बनती। उस सुकोमल वय में भी सैकड़ों कि.मी. की पदयात्रा जंगलों, घाटियों एवं रेगिस्तानों में वे साथ-साथ करती थी। विवाह के बाद अपने सारे दायित्वों को खूब अच्छी तरह वहन करके जीवन के हर क्षेत्र में प्रिय पात्र, सम्मानित और शीर्षस्थ रही। समाज सेवा में वे सदा अग्रणी रही। वीरायतन की कठोर सक्रिय यात्रा में भी वे सदैव साथ रही। प्राय: तीन माह तक उन्हें कैन्सर की पीड़ा रही किन्तु वे परास्त नहीं हुई। दृढ़तापूर्वक उस पीड़ा में भी समाधिभाव में रही। डॉक्टर और हॉस्पिटल के लिए विस्तृत सम्पन्न परिवार का आग्रह उन्हें अपने संकल्प से डिगा न सका।

पूज्य ताई माँ के द्वारा संथारा के पच्चक्खान पूर्वक आत्मभावों में समाधिपूर्वक उन्होंने ऊर्ध्वगति प्राप्त की।

घोडनदी श्रीसंघ के भूतपूर्व संघपति श्री शांतिलाल जी कोठारी का 28.09.2022 को देहान्त हो गया। वे अपने नामानुरुप शान्त मृदुभाषी और मिलनसार स्वभाव के थे। वे कर्मठ थे, धर्मप्राण थे और समाज के लिए आधार स्तम्भ थे। परमपूज्य गुरुमाता साध्वीश्री सुमति कुंवरजी एवं आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी श्री ताई माँ के चरणों में सर्वतोभावेन समर्पित थे।

घोडनदी में वीरायतन कार्यक्षेत्र के निर्माण के लिए उनका उत्कृष्ट भाव था। श्री प्रीतेश, श्री पंकज एवं श्री प्रणीता योग्य पिता की सुयोग्य संतान है। विश्वास है हमें कि वे अपने पिता के सुपथ पर चलकर उनकी भावनाओं को मूर्तरुप देंगे। और समाज में कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

उन्हें वीरायतन परिवार की श्रद्धांजलि अर्पित है।

With heavy heart and deep sorrow we bid adieu to our papa , on October 23,2022. He was suffering from Alzheimer since last few years. But that did not deter him to live life in the best way possible. He enjoyed little things in life and ensured he spread joy to people around him. He was a simple , honest and a giving person who always lived and wished well for others. He was born a human but he passed as a super human. He pledged to donate his organs , which are on its way to save at least 4 lives. It takes magnanimous heart and determination to give back and help people. He has inspired us to be good , honest and give back to the society. Miss you forever. You are there with us in those 4 living souls. Rest in peace.

कलकत्ता श्री जसुभाई मालाणी दिवंगत हुए। वे मालाणी परिवार के ही नहीं समाज के आधार और आदर्श पुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन के बहुमूल्य पांच दशकों से अधिक समय का सदुपयोग संघ सेवा में समर्पित किया। साथ ही साथ परिवार के हर सदस्य को संघ सेवा में सक्रिय सहयोग के उत्तम संस्कारों से संस्कारित किया।

कमाणी जैन भवन के सारे शुभ आयोजन चाहे संघ के हो, जैन जागृति मंडल या **'श्री सुमति महिला मण्डल'** के हो, **'श्री चन्दना स्वाध्याय मंदिर'** या आयंबिल शाला के हो सभी सत्कार्यों में उनकी अमूल्य सेवाएँ रही हैं। उनके सद्गुणों की सुगन्ध सदा अविस्मरणीय रहेगी।

शासनदेव की कृपा से उनकी आत्मा निरन्तर ऊर्ध्व गामी रहे।

दो जीवन के अन्तिम क्षण तक देते रहो वस्तुतः
जो देने की भावना रखता है
उसे ही प्राप्त होता है सबकुछ जो श्रेष्ठ है।

A Grand Celebration at Veerayatan- Kutch

To Commemorate 50 Years of Veerayatan

GOLDEN JUBILEE

with Sadhvishri Chetna ji's 50th Dikshotsav

- 87th Birthday of "Pujya Tai Maa"
- Diksha Mahotsav
- Inauguration of Auditorium

Save the Dates : 26th, 27th, 28th Jan- 2023

You are cordially invited to grace the occasion

Program Details

26th January 2023

87th Birthday Celebration of "Pujya Tai Maa"

The Golden Fifty Years of Veerayatan

Inauguration of Auditorium

27th January 2023

Future vision of Veerayatan & Felicitation Ceremony

28th January 2023

Diksha Mahotsav
Kumari Jhalak Jain

For formal Invitation with details will follow shortly

Warm Regards,
Shri Sunderji M. Shah, President- Veerayatan, Kutch

वीरायतन द्वारा पालीताना में साधु साध्वी जी भगवन्तों की सेवा हेतु भव्य नेत्र शिविर का आयोजन सम्पन्न।
इस शिविर में 140 साधु-साध्वी भगवंतो के आंखों की जांच, आंखों की सर्जरी, दवाइयां एवं चश्मा वितरण का लाभ लिया गया।

With Best Compliments

soapytwist
Be Naturally Creative
The Soap Crafters
5245, Chowk Bara Tuti, Sadar Bazar, Delhi-110006
Email : info@soapytwist.com Website : www.soapytwist.com

T.T. Garments
अच्छे लगे अच्छे दिखे
T.T. LTD. : E-mail: export@tttextiles.com
Web. : www.tttextiles.com

C. R. Kothari & Sons Group of Companies
Members : NSE BSE MCX MCXSX - DP-CDSIL
Core Presence in : Capital Markets, Depository Participants, Advisory Services Commodities, Green Energy, Logisstics
Offices : Mumbai Vadodara Jaipur Ajmer

Guru Bhakt
Chennai